पाठ 1

कुछ और भी दूँ

—श्री रामावतार त्यागी

4YHCTV

राष्ट्रीय भावों से ओत–प्रोत यह कविता बच्चों के कोमल मन में स्वदेश प्रेम की भावना को सहज ही जागृत करती है। कवि देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को प्रस्तुत है, पर इतने से ही उनका मन संतुष्ट नहीं होता। कवि–मन में हर पल राष्ट्र के लिए कुछ और भी अर्पित करने की उत्कट चाहत है। स्वयं को अकिंचन मानते हुए भी कवि अपने हर भाव, चाहत और अपनी हर चेष्टा को राष्ट्र माता के चरणों में समर्पित करने को कृत संकल्पित है और देशवासियो को भी प्रेरित करते हैं।

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँ, तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण–कण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

भाँज दो तलवार को लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी,

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण–क्षण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरे, द्वार–घर–आँगन क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बायें हाथ में ध्वज को थमा दो।

ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण–तृण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर क्यों करना चाहता है ?
2. माँ के किस ऋण की बात कवि कहते हैं ?
3. कुछ और देने की चाहत कवि को क्यों है ?
4. कवि स्वयं को अकिंचन क्यों कह रहे हैं ?
5. क्या स्वीकार करने का आग्रह कवि राष्ट्र माँ से कर रहे हैं ?
6. चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ– पंक्तियों के माध्यम से कवि किन भावों को व्यक्त करना चाहते हैं?

पाठ से आगे

1. स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित आयु का क्षण–क्षण समर्पित –
   इस कविता को पढ़ने के बाद आपको क्या महसूस होता है? यह कविता पाठ की अन्य कविताओं जैसी है या उससे अलग है। अपने शब्दों में लिखिए।
2. इस कविता में कवि राष्ट्र के प्रति अपना सब कुछ अर्पित करने की बात करता है। क्या आपको लगता है कि हमारे आस–पास के लोग इसके लिए तैयार हैं ? लिखिए

4YR8VI

3. अपनी माँ और राष्ट्र माता में आपको क्या फर्क लगता है ? अगर हम सब अपनी माँ के सम्मान के प्रति उत्तरदायी हैं, तो स्वाभाविक रूप से राष्ट्र माता के प्रति भी हम समर्पित होंगे। विचार कर लिखिए।
4. राष्ट्र के प्रति हमारे समर्पण में बाधक तत्व आपको क्या लगते हैं ? साथियों के साथ विचार कर अपनी समझ को लिखिए।

भाषा से

4Z14X6

1. इस कविता में बहुत से तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे – ऋण, अकिंचन, भाल, अर्पण, चरण, ध्वज, सुमन, नीड़, तृण इन शब्दों का छतीसगढ़ी भाषा में क्या प्रयोग प्रचलित है उन्हें खोज कर वाक्य में प्रयोग कीजिए।
2. निम्नलिखित शब्दों के सही रूप को छांट कर लिखिए–

   न्यौछावर/न्योछावर,आशीश/आशीष, अकिंचन/अकीन्चन, सवीकार/स्वीकार, स्वाभाविक/स्वभाविक, आसय/आशय, अनुपरास/अनुप्रास, कृतज्ञ/क्रतग्य।
3. प्रस्तुत कविता में तुक के रूप में त, न और र वर्ण का बार–बार दुहराव देखने को मिलता है। जहाँ वर्णों की बार–बार आवृत्ति होती है उसे हम अनुप्रास अलंकार कहते हैं।

   जैसे– गान अर्पित, प्राण अर्पित।
   रक्त का कण– कण समर्पित।

   पंक्ति में त वर्ण का दुहराव देख जा सकता है। पाठ में ऐसे अन्य पंक्तियों को ढूंढें जहाँ अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ हो।

योग्यता विस्तार

4Z9ZYT

1. 'राष्ट्र के प्रति नागरिक के क्या कर्तव्य हैं' इस विषय पर कक्षा में विचार कर मुख्य बिन्दुओं को लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
2. आशा का दीप–(दिनकर), सारे जहाँ से अच्छा–(इकबाल), आदि देशभक्ति पूर्ण कविताओं को खोज कर पढ़िए।